Paper - 1 - Principles of Sociology

Topic :- (Scope or Subject Matter of Sociology)
समाज शास्त्र का अध्ययन क्षेत्र

समाजशास्त्र के विषयक्षेत्र (scope) एवं विषय सामग्री (Subject Matter) के सम्बन्ध में दो प्रमुख मत हैं। एक मत के अनुसार समाजशास्त्र एक विशिष्ट विज्ञान है (Special science)। इसमें ऐसे विषयों का ही अध्ययन किया जाना चाहिए जो दूसरे विज्ञानों के द्वारा नहीं किया जाता है। दूसरे मत के अनुसार समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है (General science)
इन दोनों मतों के अनुसार समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र भिन्न-भिन्न हैं। इन विचारधाराओं को हम क्रमशः स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal School) तथा समन्वयात्मक सम्प्रदाय (Synthetic school) कहते हैं।

(I) स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal school) →
इस सम्प्रदाय के समर्थकों में सिमेल, वेबर, टॉनीज और वानविज, आदि समाजशास्त्र प्रमुख हैं। इस सम्प्रदाय के समाजशास्त्रियों ने समाज के स्वरूप (Form) और अंतर्वस्तु (Content) में भेद किया है।

(1) जार्ज सिमेल के विचार —
प्रसिद्ध समाजशास्त्री जार्ज सिमेल का कथन है कि समाजशास्त्र को केवल सामाजिक संबन्धों के स्वरूपों (Forms of relationship) की विवेचना और विश्लेषण से ही संबन्धित होना चाहिए। अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए सिमैल ने सामाजिक संबन्धों के स्वरूप और अंतर्वस्तु में भेद किया है। इनके अनुसार सभी भौतिक और अभौतिक वस्तुओं के समान सामाजिक संबन्धों का भी एक स्वरूप (Form) होता है और दूसरी इसकी अंतर्वस्तु (Content)। उदाहरण के लिए यदि हम सामाजिक संबन्ध प्रतिस्पर्द्धा को देखें, तो प्रतिस्पर्द्धा के लक्षण क्या हैं, इसकी उत्पत्ति और समाज पर इसके प्रभाव को देखें तो यह इसका बाहरी स्वरूप है। लेकिन यदि प्रतिस्पर्द्धा राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक हो तो यह प्रतिस्पर्द्धा की 'अंतर्वस्तु' है। अंतर्वस्तु का अध्ययन अन्य सामाजिक विज्ञानों में भी होता है लेकिन समाजशास्त्र में केवल सामाजिक संबन्धों के स्वरूपों का ही अध्ययन

Ajanta Officer

Scanned with CamScanner